

# डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 2, मध्यकालीन कैथोलिक धर्म

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 2 है, मध्यकालीन कैथोलिक धर्म।

लेकिन परिचयात्मक टिप्पणियों के संदर्भ में, व्याख्यान एक शुरू किए बिना पाठ्यक्रम के परिचय द्वारा, मैं बस कुछ बातों का उल्लेख करना चाहता हूँ, बस, इस तरह से, कि आप इस पाठ्यक्रम में अध्ययन करते समय ध्यान में रखें, और पहले व्याख्यान में जाने से पहले, कुछ ऐसे विचार हैं जिनके बारे में मैं चाहता हूँ कि आप इस पाठ्यक्रम में धर्मशास्त्र का अध्ययन करते समय सोचें।

तो, ठीक है, एक बात पर विचार करें: हम पूरे पाठ्यक्रम के दौरान इन पर निष्ठा रखने की कोशिश करेंगे। हम देखेंगे कि हम कितना अच्छा करते हैं। लेकिन सबसे पहले विचार यह है कि हम पाठ्यक्रम में क्या करना चाहते हैं, जो वास्तव में प्रमुख विषयों में महारत हासिल करना है।

हम वास्तव में उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं जो प्रमुख है, जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, जो वास्तव में महत्वपूर्ण है। हमने विचारों, घटनाओं और लोगों का उल्लेख किया है, और हम वास्तव में उसी पर टिके रहना चाहते हैं और उसी पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। धर्मशास्त्र में किसी तरह से भटक जाना बहुत आसान है, और इसी तरह, लेकिन हम वास्तव में उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं जो केंद्रीय महत्व का है।

और कभी-कभी, हमें इस बात में अंतर करना पड़ता है कि यहाँ क्या महत्वपूर्ण है, जीवन को बदलने वाला महत्व है, और क्या कम महत्व का है। और लोग हमेशा ये अंतर नहीं करते। इसलिए कभी-कभी वे छोटी चीज़ों में महारत हासिल कर लेते हैं, या वे बड़ी चीज़ों में कम महत्व रखते हैं।

इसलिए, हम ऐसा करने की कोशिश करना चाहते हैं। तो यह एक तरह का विचार है। दूसरा विचार यह है कि हम धर्मशास्त्र पर चर्चा करते समय विनम्रता की भावना रखना चाहते हैं, धर्मशास्त्र के बारे में बोलते समय श्रद्धा की भावना रखना चाहते हैं, और धर्मशास्त्र के बारे में बोलते समय विनम्रता रखना चाहते हैं।

क्योंकि धर्मशास्त्र काफी जटिल है, जैसा कि हम पाठ्यक्रम में देखेंगे, और हमें इसे बहुत विनम्रता के साथ अपनाना चाहिए। हममें से किसी के पास सभी उत्तर नहीं हैं। इसलिए हम पाठ्यक्रम में एक साथ सीख रहे हैं।

और मुझे लगता है कि हमारे लिए एक अच्छे व्यक्ति का उदाहरण सेंट ऑगस्टीन होगा। सेंट ऑगस्टीन ने, आप जानते हैं, बहुत कुछ लिखा, और क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर

सेंट ऑगस्टीन हमारे समय में होते, तो वे कंप्यूटर के साथ क्या लिखते? मेरा मतलब है, यह अद्भुत होता।

वैसे भी उन्होंने जो कुछ भी बनाया वह आश्चर्यजनक है। लेकिन सेंट ऑगस्टीन ने पूरे धर्मशास्त्रीय उद्यम को बहुत विनम्रता और बहुत श्रद्धा के साथ अपनाया। वह हमारे लिए एक अच्छा मॉडल और एक अच्छा उदाहरण बन गए हैं।

उन्होंने एक उदाहरण के रूप में त्रिदेवों पर एक ग्रंथ लिखा, और त्रिदेवों पर अपने ग्रंथ में, ग्रंथ के अंत में, उन्होंने त्रिदेवों और अन्य बातों के बारे में बोलते समय हुई गलतियों के लिए, एक तरह से, क्षमा मांगी। इसलिए, सेंट ऑगस्टीन हमारे लिए एक अच्छा आदर्श बन गए हैं। इन सभी विषयों पर बहुत विनम्रता से बात करें।

तीसरी बात जो मैं बताना चाहता हूँ वह यह है कि धर्मशास्त्र का निर्माण चर्च के जीवन में वास्तव में महत्वपूर्ण रहा है। आप चर्च के जीवन और मंत्रालय को तब तक नहीं समझ सकते जब तक आप उस धर्मशास्त्र को नहीं समझते जिसने इसे आगे बढ़ाया, इसे प्रेरित किया, इसे प्रेरित किया। यह वास्तव में, वास्तव में, बिल्कुल महत्वपूर्ण है।

और लोग धर्मशास्त्र, धार्मिक सत्यों के लिए मर चुके हैं। और इसलिए यह आश्चर्यजनक है कि ये धार्मिक सत्य इन लोगों के लिए कितने महत्वपूर्ण थे, कि वे इन सत्यों के लिए अपने जीवन का बलिदान करने को तैयार थे। इसलिए, सिद्धांत और हठधर्मिता का निर्माण महत्वपूर्ण रहा है।

सम्राट के साथ थोड़ा संघर्ष था क्योंकि सम्राट जिस तरह से धार्मिक मामलों और अन्य बातों पर चर्चा कर रहा था। और मैक्सिमस द कन्फेसर उसके सामने खड़े होकर कहने को तैयार था, नहीं, तुम जो कह रहे हो वह गलत है।

आप चर्च को अलग-थलग करके छोड़ रहे हैं और इसी तरह की अन्य बातें। यह वास्तव में बहुत क्रूर समय था। लेकिन अपनी परेशानी के लिए, मैक्सिमस द कन्फेसर की जीभ काट दी गई और उसका दाहिना हाथ काट दिया गया ताकि वह अब सही धर्मशास्त्र न बोल सके और न ही लिख सके।

लोग धर्मशास्त्र के लिए सचमुच जीते हैं, मरते हैं और कष्ट सहते हैं। इसलिए, यह चर्च के जीवन में महत्वपूर्ण रहा है, और यह चर्च के जीवन के लिए वास्तव में महत्वपूर्ण रहा है। चौथा, बस एक त्वरित विचार, और हम इसे पाठ्यक्रम में बहुत देखेंगे।

धर्मशास्त्र, एक तरह से, उस युग का प्रतिबिंब है जिसमें आप रहते हैं। यह इतिहास का प्रतिबिंब है। यह इतिहास में जो कुछ चल रहा है उसका प्रतिबिंब है।

एक अर्थ में इतिहास प्रश्न पूछता है, और धर्मशास्त्र बाइबल और चर्च के धार्मिक विकास के आधार पर उन प्रश्नों का उत्तर प्रदान करता है। अब, आप हमेशा ऐसा नहीं कर सकते। हम पाठ्यक्रम में इसे बहुत देखेंगे, और आप हमेशा यह नहीं बता सकते कि कौन पहले आता है। क्या इतिहास पहले आता है, और फिर धर्मशास्त्र प्रश्नों का उत्तर देता है? या क्या ऐसी चीजें हैं जो

युग के लिए धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण हैं, और इसलिए धर्मशास्त्र युग का नेतृत्व करता है, इतिहास का नेतृत्व करता है? कौन पहले आता है? जहाँ तक मेरा सवाल है, यह एक चक्रीय प्रकार की चीज है।

धर्मशास्त्र उन सवालों का जवाब देता है जो युग पूछता है, लेकिन दूसरी ओर, धर्मशास्त्र अक्सर वह सवाल पूछता है जिसका उत्तर इतिहास को देना होता है। इसलिए, यह चक्रीय है। हम उस चक्रीय प्रकार के इतिहास पर नज़र रखने जा रहे हैं जैसा कि हम विभिन्न युगों में करते हैं।

ठीक है, बस दो अंतिम बातें। आखिरी से अगली बात यह है। इस कोर्स में, मैं कभी नहीं चाहूँगा कि आप यह सोचें कि धर्मशास्त्र रहस्य का खंडन है।

धर्मशास्त्र रहस्य का खंडन नहीं है। हम आस्था के महान रहस्यों से विस्मित हैं। धर्मशास्त्र क्या है, यह ईश्वर द्वारा हमें दिए गए दिमाग से जितना संभव हो सके उतना समझने का प्रयास है।

लेकिन दिन के अंत में, हम कहते हैं कि हम महान रहस्य के सामने खड़े हैं। हम वैज्ञानिक या तर्कसंगत तरीके से त्रिदेव, क्राइस्टोलॉजी या आस्था द्वारा औचित्य को समझाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। हम ऐसा करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं।

हम बाइबल की रोशनी और चर्च ने जो सिखाया है, उसके आधार पर जितना संभव हो सके उतना समझने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए, हम जितना संभव हो उतना समझने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हम मानते हैं कि हम अक्सर रहस्य में खड़े होते हैं। और हम इसमें आनंद लेते हैं।

हमें यह बहुत पसंद है। यह अद्भुत है। लेकिन दूसरी ओर, जब हम धर्मशास्त्र पर चर्चा करते हैं तो हम अपना दिमाग दरवाजे पर नहीं छोड़ते।

हम ईश्वर द्वारा हमें दिए गए दिमाग का उपयोग यह समझने के लिए करते हैं कि धर्मशास्त्र क्या है, यह कैसे लागू होता है, इत्यादि। और फिर एक और बात है। मुझे उम्मीद है कि यह कोर्स आपके लिए सिर्फ एक अकादमिक अभ्यास नहीं होगा।

मुझे उम्मीद है कि यह उस धर्मशास्त्र को लेने का अभ्यास होगा जिसके बारे में हम बात करते हैं, इसे अपने जीवन में लागू करें, अपने जीवन में, अपने मन में इसके बारे में सोचें, और अपने जीवन और मन में अपने धर्मशास्त्र के लिए इसे कार्यान्वित करें। तो, यह सिर्फ एक अकादमिक अभ्यास नहीं है। मुझे उम्मीद है कि यह आपके लिए भी कुछ सार्थक और अस्तित्वगत होगा।

और मुझे उम्मीद है कि हम इस बारे में अच्छी चर्चा करेंगे कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं क्योंकि आप अपने अनुभव और अपनी समझ से इस पर आते हैं। मुझे उम्मीद है कि हम इस बारे में बहुत अच्छी चर्चा करेंगे, न केवल जब हम शेर की मांद में पाठ से निपटने के लिए मिलेंगे बल्कि तब भी जब हम इस सामग्री पर एक साथ चर्चा करेंगे। तो ये कुछ परिचयात्मक टिप्पणियाँ हैं जो मैंने उस दिन की थीं, लेकिन हमें यहाँ चीजों को आगे बढ़ाने के लिए आगे बढ़ना पड़ा।

ठीक है, मैं व्याख्यान 1 को देखने जा रहा हूँ, और मैं व्याख्यान संख्या और शीर्षक के अनुसार जा रहा हूँ। यह पाठ्यक्रम के पृष्ठ 12 पर है। यह मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म और औचित्य की प्रकृति है।

जैसा कि आप देख सकते हैं, मैं पाँच प्रमुख विषयों पर बात करने जा रहा हूँ। मैं इस व्याख्यान में पाँच प्रमुख बातें करने जा रहा हूँ। ठीक है, हम बस कुछ ही पलों में पाप की प्रकृति पर चर्चा करने जा रहे हैं, लेकिन मैं यहाँ सबसे पहले एक प्रस्तावना देना चाहता हूँ।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इस व्याख्यान और उसके बाद के व्याख्यानों में हम जॉन कैल्विन के बारे में बात करेंगे। हम इस व्याख्यान में लूथर के बारे में थोड़ा-बहुत बात करेंगे और फिर कैल्विन के बारे में बात करेंगे। लेकिन इस व्याख्यान में मैं समकालीन रोमन कैथोलिक धर्म के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ।

मैं समकालीन रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। मैं 21वीं सदी के रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूँ, वह मध्ययुगीन दुनिया में रोमन कैथोलिक चर्च की आपके लिए एक धार्मिक तस्वीर खींचना है, उस दुनिया में जिसमें मार्टिन लूथर और कैल्विन आए।

यही रोमन कैथोलिक धर्म है जिसका मैं चित्र बना रहा हूँ। और मैं उस मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च और आज के रोमन कैथोलिक चर्च के बीच कोई संबंध बनाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। बहुत सारे अंतर हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च संकट में था।

इस मामले का सच यह है कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च में कुछ वास्तविक धार्मिक दुविधाएँ और धार्मिक समस्याएँ थीं जिनका सामना करने की आवश्यकता थी। कैल्विन और लूथर जैसे लोग आए और उन्होंने ऐसा किया। लेकिन कृपया जान लें कि मैं उस मध्ययुगीन कैथोलिक चर्च के बारे में बात कर रहा हूँ।

यह समझना और ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। ठीक है। अब, मैं A, B, C और D के साथ जो कर रहा हूँ, पाप की प्रकृति, शोधन, प्रायश्चित और भोग, मैं वहाँ जो करने की कोशिश कर रहा हूँ वह मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च, मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च के धर्मशास्त्र की एक तस्वीर को एक साथ रखना है।

यह एक पहली की तरह है, और मैं आपके लिए उस पहली को एक साथ जोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ ताकि हम पीछे खड़े होकर मध्ययुगीन कैथोलिक चर्च की तस्वीर देख सकें। नंबर ई रिफॉर्मेशन की प्रतिक्रिया होगी। जॉन कैल्विन में जाने से पहले बस यह देखें कि रिफॉर्मेशन ने इन सबका कैसे जवाब देना शुरू किया। लेकिन मुझे उम्मीद है कि हम आपके लिए एक तस्वीर बना सकते हैं।

और यह ज़रूरी नहीं है कि हर बार तस्वीर सुंदर ही हो। यहाँ कुछ वास्तविक कठिनाइयाँ हैं। लेकिन मैं चित्र बनाने की उम्मीद कर रहा हूँ, और एक दूसरे से संबंधित है।

एक बार जब आप पहली के इन चार टुकड़ों को पा लेते हैं, तो उनमें से प्रत्येक एक दूसरे को काटता है। एक अर्थ में, आप एक के बिना दूसरे को नहीं पा सकते। इसलिए हम यही करने की कोशिश करने जा रहे हैं।

ठीक है। सबसे पहले, आइए बात करते हैं कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक पाप के बारे में क्या सोचते थे, उन्होंने इसे कैसे परिभाषित किया, उन्होंने इस पर कैसे चर्चा की और उन्होंने इसके बारे में कैसे बात की। वास्तव में, मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च ने पाप को दो अलग-अलग प्रकार के पापों में विभाजित किया।

तो, अगर आप इसे पहले से ही नहीं समझते हैं, तो आप यह नहीं समझ पा रहे हैं कि मध्ययुगीन चर्च में औचित्य की प्रकृति के बारे में यहाँ क्या हो रहा है। तो, आइए हम यहाँ दो तरह के पापों के बारे में बात करते हैं। पहला है नश्वर पाप।

मध्यकालीन रोमन कैथोलिक चर्च ने नश्वर पाप के बारे में बात की थी। और मेरे पास वे हैं। वे दोनों आपके पाठ्यक्रम में हैं, लेकिन मैं उन्हें यहाँ भी डालूँगा। ऐसा नश्वर पाप।

ठीक है। आइए हम नश्वर पाप की परिभाषा दें। मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म के अनुसार नश्वर पाप क्या है? नश्वर पाप ईश्वर के कानून के विरुद्ध कोई भी बड़ा अपराध है।

यह एक नश्वर पाप है। यह ईश्वर के कानून के खिलाफ कोई भी बड़ा अपराध है, जैसे कि दस आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़ना। यह एक नश्वर पाप है।

ठीक है। इसे नश्वर पाप क्यों कहा जाता है? इसे नश्वर पाप इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह वह पाप है जो आपको मारता है। यह वह पाप है जो आपकी आत्मा को मारता है।

यह वह पाप है जो वास्तव में आपको अनंत दंड की ओर ले जाएगा। इसीलिए इसे नश्वर पाप कहा जाता है। तो यह एक तरह से बुरी खबर है।

यह एक बुरी खबर है। नश्वर पाप करो। यह तुम्हारी आत्मा को मार देता है।

यह आपको अनंत दंड की ओर ले जाता है। यह एक तरह से बुरी खबर है। हालाँकि, अच्छी खबर यह है कि नश्वर पापों को स्वीकार किया जा सकता है और किया जाना चाहिए, और वास्तव में, उन्हें स्वीकार किया जाना चाहिए।

यदि आप अपने नश्वर पापों को स्वीकार करते हैं, तो ऐसा होता है कि आपको अपने नश्वर पापों के लिए अनन्त दंड नहीं दिया जाएगा। आप उन्हें स्वीकार करेंगे, और आप उनसे मुक्त हो जाएँगे। लेकिन उन्हें स्वीकार करने के बाद भी, आप उस नश्वर पाप को करने के लिए दंड भुगतते हैं।

तो आप अपने प्राणघातक पापों को स्वीकार करते हैं। आपने दस आज्ञाओं में से एक का उल्लंघन किया है। आप पुजारी के सामने अपने प्राणघातक पाप को स्वीकार करते हैं।

यह ठीक है। इसका मतलब यह है कि आप अनंत काल तक नरक में नहीं जाएँगे। लेकिन यह आपको सज़ा से मुक्त नहीं करेगा।

उस नश्वर पाप के कारण अभी भी सज़ा है। आपको अभी भी उस नश्वर पाप के लिए कुछ समय तक सज़ा काटनी है। अब, आपको उस नश्वर पाप के लिए, इस जीवन में और अगले जीवन में, एक तरह से सज़ा भुगतनी होगी।

तो, नश्वर पाप बहुत बुरा है। दस आज्ञाओं में से एक को तोड़ना बहुत बुरा है, आप जानते हैं। तो यह पहला नश्वर पाप है।

तो, हम उस शब्द को याद रखना चाहते हैं और यह सब क्या है। अब, दूसरे प्रकार के पाप को मामूली पाप कहा जाता था। अब, मैं मामूली पाप की परिभाषा देता हूँ, और फिर हम बात करेंगे कि ये दोनों एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं।

लेकिन मामूली पाप भगवान या हमारे पड़ोसी के खिलाफ छोटे और क्षमा योग्य अपराध थे। भगवान और हमारे पड़ोसी के खिलाफ छोटे और क्षमा योग्य अपराध। अब, तकनीकी रूप से, मेरा मतलब है कि तकनीकी रूप से, मामूली पाप आपकी आत्मा को नहीं मारते हैं।

मामूली पाप प्राणघातक नहीं होते। वे आपकी आत्मा को नहीं मारते। वे आपको अनंत दंड की ओर नहीं भेजते।

लेकिन जब आप मामूली पाप करते हैं, तो आपके द्वारा किए गए मामूली पापों के लिए भी आपको कुछ सज़ा मिलती है। इसलिए, मैं 2 और 2 जोड़ता हूँ और मुझे 5 मिलते हैं। क्या यह एक घातक पाप है या मामूली पाप? अगर मैं 2 और 2 जोड़ता हूँ और मुझे 5 मिलते हैं, तो यह एक मामूली पाप है। मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था।

मेरा इरादा भगवान या अपने पड़ोसी का अपमान करने का नहीं है। मैंने बस एक गलती की है, आप जानते हैं। मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था, लेकिन मैंने गलती कर दी।

अब, अगर मैं एक व्यापारी हूँ और मैं 2 और 2 जोड़कर आपसे 5 वसूलता हूँ, तो यह कोई मामूली पाप नहीं है। यह एक घातक पाप है क्योंकि मैंने आपसे झूठ बोला है। लेकिन अगर मैं सिर्फ 2 और 2 जोड़कर 5 पाता हूँ और बस, आप जानते हैं, भूल गया या मेरा दिमाग फिसल गया या कुछ और, तो यह एक मामूली पाप है।

ठीक है, यहाँ समस्या क्या है? समस्या यह है कि आपको मामूली पापों को भी स्वीकार करना चाहिए। इसलिए भले ही तकनीकी रूप से, मुझे लगता है कि आपको वास्तव में ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, आपको अपने मामूली पापों को स्वीकार करना चाहिए। लेकिन यहाँ दूसरी समस्या यह है कि चर्च में एक आम व्यक्ति के रूप में, और वैसे, हम यहाँ मध्ययुगीन चर्च के बारे में बात कर रहे हैं, इसलिए चर्च में एक आम व्यक्ति के रूप में, आप उस मध्ययुगीन दुनिया में अपने छोटे से गाँव में जन्म लेंगे, रहेंगे और मरेंगे।

आपको यात्रा करने और दुनिया देखने आदि के अवसर नहीं मिलेंगे। आपका पूरा जीवन आपके छोटे से गांव तक ही सीमित रहने वाला है, और यह बात आपसे पहले की पीढ़ियों के लिए सच रही है; यह आपके बाद की पीढ़ियों के लिए भी सच रहने वाला है। यही आपकी दुनिया होगी।

तो, आपकी दुनिया, आपकी धार्मिक दुनिया की व्याख्या उस स्थानीय पुजारी द्वारा की जाएगी। तो, समस्या यह है कि नश्वर पापों और मामूली पापों के बीच कोई महीन रेखा नहीं थी। एक पुजारी जिसे मामूली पाप कह सकता है, अगले गांव का पुजारी उसे नश्वर पाप कह सकता है।

तो, आपके पास नश्वर पापों और मामूली पापों के बीच कोई महीन अंतर नहीं है। तो उस महीन अंतर के बिना, सबसे अच्छी बात जो आप कर सकते हैं वह है अपने सभी पापों को स्वीकार करना और यह सुनिश्चित करने के लिए हर समय ऐसा करना कि आपकी आत्मा हमेशा के लिए शापित न हो। तो आप एक अच्छे ईसाई हैं, आप अपने पापों को स्वीकार करने जा रहे हैं, आप इसे हर समय करने जा रहे हैं, आप शायद उन पापों को भी स्वीकार करने जा रहे हैं जिनके बारे में आपको यकीन नहीं था कि आपने किया भी है, लेकिन आप अपने पापों को स्वीकार करने जा रहे हैं क्योंकि आप नरक में नहीं जाना चाहते हैं।

हमेशा के लिए शापित नहीं होना चाहते, आप हमेशा के लिए ईश्वर से अलग नहीं होना चाहते। इसलिए, अपने सभी पापों की स्वीकारोक्ति आपका दैनिक जीवन है, और यही वह है जो आप अपने छोटे से गाँव में करते हैं। और आपको अपने पुजारी पर निर्भर रहना पड़ता है कि वह आपको बताए कि घातक पाप क्या है और मामूली पाप क्या है, लेकिन आप एक तरह से खुद को सुरक्षित रखना चाहते हैं।

अब, अगर आप बस एक मिनट के लिए आगे बढ़ते हैं, और वैसे, जब आप अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो पादरी आपको आपके पापों से मुक्त कर देगा, लेकिन हम इसके बारे में यहाँ दूसरे भाग में बात करेंगे। चलिए बस एक मिनट के लिए आगे बढ़ते हैं मार्टिन लूथर पर। मार्टिन लूथर मठ में गया; मार्टिन लूथर मठ में प्रवेश किया।

मार्टिन लूथर एक अच्छे रोमन कैथोलिक थे और जब उन्होंने मठ में प्रवेश किया, तो मार्टिन लूथर को लगा कि एक अच्छे रोमन कैथोलिक के रूप में उन्हें वास्तव में अपने पापों को स्वीकार करने की आवश्यकता है। एक समय ऐसा भी था जब मार्टिन लूथर मठ में प्रवेश करते थे और प्रतिदिन छह घंटे अपने पापों को स्वीकार करते थे। इसलिए, प्रतिदिन छह घंटे तक वे पापों को स्वीकार करते थे।

वह अपने सभी पापों के बारे में सोच रहा था, उन्हें स्वीकार कर रहा था। यहाँ तक कि उसके पाप स्वीकार करने वाले, उसके पिता भी उसके पापों को स्वीकार करते-करते थक गए थे और उन्होंने सुझाव दिया कि शायद उसे दिन में छह घंटे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन लूथर जब दिन में छह घंटे पाप स्वीकार करता था, तो वह एक तरह से मध्ययुगीन दुनिया में रोमन कैथोलिक होने के डर को प्रदर्शित कर रहा था।

इसलिए वह रोमन कैथोलिक संस्कृति पर विचार कर रहा है जब वह अपने पापों को छह घंटे तक कबूल करता है। मार्टिन लूथर अंततः इससे बाहर निकल गया, लेकिन फिर भी, नश्वर पापों,

मामूली पापों और कबूल करने की आवश्यकता के बारे में इस तरह का डर उस मध्ययुगीन दुनिया में बहुत मजबूत है ताकि आप अनन्त दंड में न जाएं। इसलिए हमें उन्हें बनाने की जरूरत है, यह पहली बात है, पाप की प्रकृति।

पहेली के इन चार टुकड़ों के संदर्भ में यह समझना सबसे आसान बात है, जिसे हम यहाँ संबोधित करने जा रहे हैं। यह समझने में सबसे आसान बात है, और यह सबसे छोटी बात है जिससे हम निपटते हैं, लेकिन भगवान आपका भला करे। नश्वर पाप या मामूली पाप के बारे में कुछ? यह एक मामूली पाप था, देखिए, मामूली पाप।

ऐसा करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन यह नश्वर पाप है, मामूली पाप है। यह गलती करना है, हाँ। लेकिन आपके मन में यह सवाल होगा कि क्या मैंने वह गलती करते हुए नश्वर पाप की सीमा पार कर ली है? मैंने ऐसा किया या नहीं? इसलिए लूथर ने कहा, मैं प्रतिदिन छह घंटे पाप स्वीकार करने जा रहा हूँ।

मैं अपने सभी आधारों को कवर करने जा रहा हूँ। यह और भी व्यापक है। ठीक है।

हम किसी गलती को पाप नहीं कहेंगे। यह सही है। लेकिन अगर मेरे पास पाँच बजे दो और दो थे, और मैंने ऐसा ही किया, तो यह एक गलती है।

या अगर मैं कहूँ, क्या आज बुधवार का दिन अच्छा नहीं रहा? यह एक गलती है। यह सही है। समस्या यह है कि, मध्ययुगीन दुनिया में, आपको अपने स्थानीय पुजारी पर निर्भर रहना पड़ता था कि वह आपको क्या बताए, और एक पुजारी आपको जो बता सकता है वह एक मामूली पाप है। दूसरा पुजारी आपको बता सकता है कि यह एक घातक पाप है।

तो आप निश्चित नहीं हैं। तो इस तरह के भरोसे की कमी के कारण, आप हर समय सब कुछ कबूल करने जा रहे हैं, और इसीलिए लूथर छह घंटे तक कबूल करता रहा। तो, यह पाप के बारे में एक अलग तरह का दृष्टिकोण है।

लेकिन याद रखें, हम मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्म की बात कर रहे हैं। यहाँ कुछ और बात है। पाप।

क्या आज कोई पाप के बारे में बात करना चाहता है? क्या आज कोई पाप कबूल करना चाहता है? पाप। ठीक है, यह सबसे आसान है। इससे हम शुरुआत करते हैं।

ठीक है, यहाँ B का मतलब है शुद्धिकरण का सिद्धांत। शुद्धिकरण का सिद्धांत। ठीक है, चलिए शुद्धिकरण के सिद्धांत के बारे में बात करते हैं।

मध्ययुगीन दुनिया में यह बहुत बड़ा था। मध्ययुगीन दुनिया में पार्गेटरी वाकई बहुत बड़ी थी। ठीक है।

पहली बात जो हम कहना चाहते हैं, वह यह है कि मध्ययुगीन दुनिया में, जब आपका बपतिस्मा होता था, और मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक दुनिया में, आपका बपतिस्मा एक शिशु के रूप में होता था। मध्ययुगीन दुनिया में, जब आपका बपतिस्मा होता है, तो बपतिस्मा लेने के क्षण से ही आपका मूल पाप समाप्त हो जाता है। इसलिए आपका मूल पाप धुल जाता है।

लेकिन उस समय तक आपने जो भी पाप किए हैं, उनका भी निपटारा हो जाता है। तो अब आपको शिशु अवस्था में ही बपतिस्मा दे दिया गया। इसलिए तकनीकी रूप से, जिस क्षण आपका बपतिस्मा हुआ, यदि आपने कोई पाप नहीं किया, तो आप तुरंत स्वर्ग चले जाएँगे।

इसलिए यदि आप बपतिस्मा लेते हैं और पाप नहीं करते हैं, तो आप सीधे स्वर्ग जाएँगे। अब कुछ लोगों ने इस मामले में थोड़ी सी लापरवाही बरतने की कोशिश की। कॉन्स्टेंटाइन, या कॉन्स्टेंटाइन, टमाटर, टमाटर, जहाँ तक मेरा सवाल है, आप उसे जो भी नाम देना चाहें।

सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ईसाई बन गए, लेकिन उन्हें अपनी मृत्युशय्या तक बपतिस्मा नहीं मिला। उन्हें अपनी मृत्युशय्या तक बपतिस्मा नहीं मिला क्योंकि उनका मानना था कि एक बार बपतिस्मा लेने के बाद और उन्होंने पाप नहीं किया, तो वे सीधे स्वर्ग जाएँगे। बपतिस्मा उनके मूल पापों और उस समय तक किए गए सभी पापों को धो देगा।

इसलिए, कॉन्स्टेंटाइन ने बपतिस्मा लेने के लिए अपनी मृत्युशय्या पर आने तक इंतजार किया। यह अच्छी बात नहीं है। यह एक तरह से रूसी रूले खेलने जैसा है।

लेकिन वैसे भी, अगर आप बपतिस्मा लेते हैं और मर जाते हैं, तो आप स्वर्ग जाएँगे। ज़्यादातर लोगों के लिए, यह उस तरह से काम नहीं करता है। ज़्यादातर लोगों को बचपन में ही बपतिस्मा दे दिया जाता है, और वे 20 या 30 साल या उससे ज़्यादा जीने वाले हैं, और वे पाप करने वाले हैं।

इसलिए, हर विश्वासी, सिवाय उन लोगों के जो बपतिस्मा लेने के तुरंत बाद मर जाते हैं, हर विश्वासी जब पाप करता है, तो उसे अपने द्वारा किए गए पाप के कारण सज़ा मिलती है। और वे इस जीवन में उस सज़ा से बचने के लिए काम नहीं करेंगे। वे ऐसा करने में सक्षम नहीं होंगे।

तो उन्हें अगले जन्म में सज़ा से बचने के लिए काम करना होगा। अब सवाल यह है कि वे उस सज़ा से बचने के लिए कहाँ जा रहे हैं? और जिस जगह पर वे उस सज़ा से बचने के लिए काम करने जा रहे हैं, उसे शुद्धिकरण कहते हैं। तो शुद्धिकरण वह जगह है जहाँ सभी बपतिस्मा प्राप्त विश्वासी मरने के बाद एक निश्चित अवधि के लिए जाते हैं, और वे इस जीवन में किए गए पापों के कारण सज़ा भुगत रहे हैं।

वे इस जीवन में किए गए पापों के कारण सज़ा काट रहे हैं। उन्हें शुद्धिकरण में शुद्ध किया जा रहा है। और जब वे शुद्ध हो रहे होते हैं, तो आप जानते हैं, आप लोहे को आग में डालते हैं। इससे क्या होता है? इससे लोहा मजबूत होता है।

इसलिए जब वे शुद्ध किए जा रहे होते हैं, तभी वे अंततः ईश्वर के साथ रहने में सक्षम हो पाते हैं। इसलिए, केवल उस अनुभव के माध्यम से ही वे ईश्वर के साथ रहने में सक्षम हो पाते हैं। इसलिए

हर कोई मूल रूप से शुद्धिकरण की ओर, सज़ा के इस स्थान पर, वास्तव में, शुद्धिकरण के इस स्थान पर जाने वाला है।

इसके कुछ अपवाद हैं। एक अपवाद यह है कि अगर आप आस्था के लिए शहीद हैं। अगर आप ईसाई धर्म के लिए शहीद हैं, तो आप पहले ही पापमोचन से गुज़र चुके हैं।

यही आपकी शुद्धि है। यही आपकी शुद्धि है। और शहीद तुरंत स्वर्ग जाएंगे।

यदि आप ईसाई धर्म के संतों में से एक हैं और आपने मैरी की तरह एक आदर्श जीवन जिया है, तो मैरी को पापमोचन नहीं हुआ। मैरी को स्वर्ग में ले जाया गया और सीधे स्वर्ग में ले जाया गया। इसलिए, यदि आप चर्च के संतों में से एक हैं और एक आदर्श जीवन जी रहे हैं, तो आप स्वर्ग जाएंगे, पापमोचन नहीं।

और यहाँ आम लोगों के बीच थोड़ी सी नाराज़गी है, लेकिन कई बार उच्च पादरी, यदि आप उच्च पादरी, विशेष रूप से पोप के स्तर को प्राप्त करते हैं, तो आप सीधे स्वर्ग जाएँगे। आप पापमोचन में नहीं जाएँगे क्योंकि आपके पास यह आदर्श जीवन है, और साथ ही, आपके पास यह आदर्श कार्य है जो ईश्वर ने आपको करने के लिए दिया है। अब, थोड़ी समस्या है क्योंकि, मध्ययुगीन दुनिया में, कई पादरी वास्तव में निंदनीय लोग थे।

मध्ययुगीन दुनिया में ऐसे पोप थे जो निंदनीय थे। और आम लोगों का विचार था कि वे स्वर्ग जा रहे हैं, लेकिन मैं नहीं जा रहा हूँ, मैं एक आदर्श जीवन जीने की कोशिश कर रहा हूँ, मैं अपने पापों को स्वीकार करने की कोशिश कर रहा हूँ और इसी तरह, लेकिन यह निंदनीय कार्डिनल या यह पोप सीधे स्वर्ग जा रहा है, यह बात लोगों को बिल्कुल भी पसंद नहीं आई। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि, मूल रूप से, सभी विश्वासी पापमोचन में जाने वाले हैं।

और ऐसा ही होने वाला है। तो हाँ, लोगों को यह आम जानकारी थी कि कार्डिनल, पोप, सीधे स्वर्ग चले गए और, या कि कुछ कार्डिनल स्वर्ग चले गए। बात चारों ओर फैल गई, है न? भले ही वे अपने छोटे से गाँव, छोटे से शहर वगैरह में रह रहे हों, लेकिन यह बात चारों ओर फैल गई कि ये लोग किस तरह का जीवन जी रहे हैं, खास तौर पर लूथर के बाद।

लूथर, प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार और मार्टिन लूथर की वजह से, वह लोगों तक यह बात पहुँचाने में खुश था। तो हाँ, तो बात चारों ओर फैल गई। वे शायद ऐसे गाँव में रहते हों जहाँ पादरी बहुत ही धिनौना जीवन जी रहा हो, लेकिन पादरी खुशी-खुशी कहेगा कि वह सीधे स्वर्ग जाएगा और उनकी तरह पापमोचन में नहीं जाएगा।

और इसलिए, यह बिल्कुल भी उचित नहीं था। यातनागृह बिल्कुल भी उचित नहीं था। आप वहाँ कितने समय तक रहेंगे, यह अज्ञात है।

तो, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने क्या पाप किए हैं और आपके पापों की सज़ा क्या है। लेकिन हम इस बारे में बस एक मिनट में बात करेंगे। ठीक है।

शुद्धिकरण बाइबल पर आधारित नहीं है। प्रोटेस्टेंटवाद द्वारा स्वीकार किए जाने वाले कैनन के संदर्भ में कोई बाइबिल संदर्भ नहीं थे, लेकिन यह बाइबिल के रिकॉर्ड पर आधारित था जिसे रोमन कैथोलिक धर्म स्वीकार करता है। यह सिद्धांत न केवल चर्च की चर्च शिक्षाओं की परंपरा पर आधारित था, बल्कि 2 मैकाबीज़ 12:39-45 पर भी आधारित था।

इसलिए, अगर मैं कभी इसके बारे में सोचता हूँ, तो मैं 2 मैकाबीज़ का अंश लाऊँगा, और मैं आपको वह अंश पढ़कर सुनाऊँगा। लेकिन उन्हें लगा कि उनके पास इस पर एक तरह की पकड़ बाइबिल के अंश से है, न कि सिर्फ़ परंपरा से। ठीक है।

अब, यहाँ वह धारणा है जो वे बना रहे हैं। अब यह एक धार्मिक धारणा होगी जिससे सुधारक असहमत होंगे। तो, यहाँ वह धारणा है जिस पर शुद्धिकरण का सिद्धांत बनाया गया था।

धारणा यह थी कि जबकि ईश्वर हमें हमारे पापों को क्षमा करता है, वह चर्च की सेवा और पादरी की सेवा के माध्यम से हमारे पापों को क्षमा करता है। लेकिन धारणा यह है कि जबकि ईश्वर हमें हमारे पापों को क्षमा करता है, फिर भी वह न्याय का ईश्वर है जो हमें हमारे पापों के लिए जवाबदेह ठहराएगा। इसलिए वह एक अर्थ में, हमसे इस सजा की मांग करता है, न केवल इस जीवन में, बल्कि वह अगले जीवन में भी इस सजा की मांग करता है।

अब, अंततः, आप जाकर भगवान से मिलेंगे क्योंकि पापमोचन नरक नहीं है। पापमोचन विश्वासियों के लिए भगवान से मिलने के लिए जाने का शुद्धिकरण का स्थान है। नरक भगवान से पूर्ण अलगाव है।

लेकिन यह ईश्वर की ऐसी प्रकृति थी जो सुधारकों द्वारा जांच के दायरे में थी जब वे आए और कहा, अच्छा, मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च किस तरह का ईश्वर विकसित कर रहा था? वे लोगों को किस तरह का ईश्वर सौंप रहे थे? और वे लोगों को ईश्वर की ऐसी प्रकृति सौंप रहे थे जो क्षमा तो करता है, लेकिन हमारे द्वारा किए गए पापों के लिए क्रोध में आकर, वह हमारे लिए उचित दंड की मांग करने जा रहा है, इस जीवन में और अगले जीवन में भी। ठीक है, अब मैं बस यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि शहर में एक औसत रोमन कैथोलिक व्यक्ति, एक औसत रोमन कैथोलिक व्यक्ति शुद्धिकरण के बारे में कैसे सोचता था। और यहाँ हम चार बातें बताएँगे।

औसत रोमन कैथोलिक व्यक्ति शुद्धिकरण के बारे में क्या सोचता है? यहाँ शुद्धिकरण की एक मध्ययुगीन छवि है। और इसलिए यह सिर्फ़ एक है, आपको बहुत कुछ मिल सकता है। लेकिन ध्यान दें कि लोग जल रहे हैं, यह शुद्धिकरण है, यह आग है।

अब, अच्छी खबर यह है कि ऐसे स्वर्गदूत हैं जो लोगों को पापमोचन से बाहर निकलने के बाद उनकी मदद करते हैं। ऐसे स्वर्गदूत हैं जो लोगों को इससे बाहर निकलने और स्वर्ग जाने में मदद कर रहे हैं। फिर भी, यह पापमोचन की एक आम मध्ययुगीन कल्पना थी।

ठीक है, अगर आप अपने गांव में रहने वाले एक आम व्यक्ति हैं और जीवन में सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश कर रहे हैं, तो आपके दिमाग में चार बातें आई होंगी। यहाँ चार बातें हैं जो आपने

पापमोचन के बारे में सोची होंगी। ठीक है, नंबर एक, पहली बात जो आप जानते थे, आपने अपने दिल में यह विश्वास किया कि आपके सभी रिश्तेदार और दोस्त पापमोचन में पीड़ित थे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आपके सभी रिश्तेदार, आपके सभी दोस्त जो आपसे पहले मर चुके हैं और चले गए हैं, वे सभी यातना में हैं। और यह यातना की वह छवि है जो उनके मन में है। यह आग में तड़पने की एक बहुत ही तरह की कल्पना है।

तो जब आप परलोक के बारे में सोचते हैं तो अपनी माँ, अपने पिता, अपने भाई-बहनों और दोस्तों के बारे में सोचना अच्छा तरीका नहीं है। उन्हें इस तरह से पीड़ित देखना, बहुत निराशाजनक है, आप जानते हैं। तो, यह पहली बात है।

जब आप अपने उन रिश्तेदारों और दोस्तों के बारे में सोचते हैं जो मर चुके हैं, तो आप यहीं के बारे में सोच रहे होते हैं। तो यह आपकी विचार प्रक्रिया में नंबर एक है। ठीक है, नंबर दो, दूसरी बात जो आप निश्चित रूप से जानते हैं वह यह है कि वे खुद की मदद नहीं कर सकते।

वे इस यातना से बाहर निकलने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते। अगर वे तीन या चार या पाँच सौ साल या हज़ार साल के लिए वहाँ रहेंगे, तो यही होगा। वे किसी भी तरह से खुद की मदद नहीं कर सकते।

तो, उन्हें बस, आप जानते हैं, मुस्कुराना होगा और एक तरह से इसे सहना होगा। ठीक है, नंबर तीन, भगवान तब तक उनकी मदद नहीं करेंगे जब तक कि उनके न्याय की भावना संतुष्ट नहीं हो जाती। तो, नंबर तीन, यहाँ फिर से भगवान की छवि है जिसके खिलाफ सुधारक प्रतिक्रिया करेंगे, लेकिन भगवान इन लोगों की मदद तब तक नहीं करेंगे जब तक कि उनका न्याय संतुष्ट नहीं हो जाता।

जब यहाँ चित्र में स्वर्गदूत इन दो लोगों को ले जा रहे हैं जो अंततः पापमोचन से बच निकले हैं, तो स्वर्गदूत ऐसा केवल इसलिए कर रहे हैं क्योंकि परमेश्वर का न्याय इन दो लोगों से पूरी तरह से संतुष्ट हो चुका है, और उन्होंने वह सारी सज़ा पूरी कर ली है जो उन्हें अब परमेश्वर से मिलने के लिए चाहिए। तो यह तीसरी बात है। तो परमेश्वर उनकी मदद नहीं करने वाला है।

अब सवाल यह है कि ईश्वर का यह कैसा दर्शन है? ईश्वर का यह कैसा दर्शन है? ठीक है, नंबर चार, अंततः, इसलिए जब यह पापमोचन के इतिहास की बात आती है तो यहाँ अंततः शब्द बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन अंततः, मध्ययुगीन दुनिया में रोमन कैथोलिक सोच में, एक विश्वास था कि आप अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के पापमोचन के समय को कम कर सकते हैं। अब, ऐसा होने में कुछ समय लगता है। ऐतिहासिक रूप से, ऐसा होने में कुछ समय लगता है, लेकिन अंततः, एक ऐसी प्रणाली है जिसे रोमन कैथोलिक चर्च ने एक तरह की धार्मिक प्रणाली में स्थापित किया है जिसके द्वारा आप अपने दोस्तों या परिवार को पापमोचन में उनके समय को कम करने में मदद कर सकते हैं।

वास्तव में, एक ऐसी प्रणाली है जिसके द्वारा आप वास्तव में अपने मित्रों और परिवार को यातना से बाहर निकाल सकते हैं। अब, इसके लिए कुछ समय लगता है। हम इसके बारे में तब बात करेंगे जब हम भोगों के बारे में बात करेंगे।

लेकिन वह चौथा बिंदु मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च में पापमोचन के अर्थ में एक तरह की खुशखबरी बन जाता है। बेटा, मैं अपनी माँ को पापमोचन से बाहर निकालने में मदद कर सकता हूँ या अपने पिता को पापमोचन से बाहर निकाल सकता हूँ। तो हम देखेंगे कि यह कैसे होता है।

ठीक है, अब पाप-शोधन के बारे में एक और बात: किसी को इस सबका प्रभारी होना चाहिए। किसी को यह निर्धारित करना होगा कि जब आप पाप करते हैं तो आपके पाप के लिए क्या दंड है, आपके पाप से किस तरह की सजा जुड़ी हुई है, और आप इस जीवन में उस पाप का कितना हिस्सा चुकाने जा रहे हैं, आपको पाप-शोधन में उस पाप का कितना हिस्सा चुकाना होगा। क्या यह 20 साल, 40 साल, 100 साल या कुछ और होगा? क्या लोगों को पाप-शोधन से बाहर निकालने का कोई तरीका है? तो किसी को इस सबका प्रभारी होना चाहिए।

किसी को तो इन सबका हिसाब-किताब रखना ही होगा। खैर, पाप-शोधन के प्रभारी व्यक्ति और इसलिए लोगों के जीवन और लोगों की नियति के प्रभारी व्यक्ति पोप हैं। पाप-शोधन के प्रभारी पोप हैं।

पोप सजा की अवधि निर्धारित करता है। पोप तय करता है कि सजा को कैसे छोटा किया जा सकता है और लोग कैसे यातना से बाहर निकल सकते हैं। यह सब पोप, एक व्यक्ति के अधिकार क्षेत्र में है।

अब यह एक व्यक्ति के लिए थोड़ी शक्ति है, क्या आप नहीं कहेंगे? मैं कहूँगा कि यह उस व्यक्ति के हाथों में थोड़ी शक्ति है। यदि वह पापमोचन का प्रभारी है और सभी के भाग्य का प्रभारी है, तो यह बहुत शक्ति है। और एक अच्छे पोप के हाथों में, यह अभी भी बहुत शक्ति है, लेकिन एक बुरे पोप के हाथों में, यह वास्तव में बहुत समस्याग्रस्त है, है न? वास्तव में, पोप के पास शक्ति है, और जब हम भोगों पर पहुंचेंगे तो हम देखेंगे कि पोप के पास लोगों को पापमोचन से तुरंत बाहर निकालने की शक्ति है।

तो, वह कह सकता है, मैं किसी को तुरंत यातना से बाहर निकाल रहा हूँ। यह बहुत बड़ी शक्ति है, है न, एक व्यक्ति के हाथ में ऐसा करने की क्षमता होना। तो, यह बहुत समस्याग्रस्त हो जाता है क्योंकि यातना पोप के पद से जुड़ी होती है, और पोप का पद यातना से जुड़ा होता है।

वे एक दूसरे से अविभाज्य रूप से बंधे हुए हैं। वे एक दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। और इसलिए वह आपके जीवन पर शासन कर रहा है, न केवल इस दुनिया में, बल्कि वह अगली दुनिया में भी आपके जीवन पर शासन कर रहा है।

वह प्रभारी है, एक व्यक्ति, बहुत सारी शक्ति। तो यह एक तरह से समस्याग्रस्त हो जाता है, मुझे लगता है आप कह सकते हैं। ठीक है, तो चलिए बस एक मिनट के लिए यहीं रुकते हैं।

पहेली का पहला टुकड़ा है पाप, प्राणघातक पाप, मामूली पाप, दो तरह के पाप, और इसी तरह। यह पहेली का पहला टुकड़ा है। पहेली का दूसरा टुकड़ा है पापमोचन, जो पाप से बहुत जुड़ा हुआ है क्योंकि यह वह जगह है जहाँ आप इस जीवन में किए गए हर पाप के कारण दंड से छुटकारा पाने के लिए जाते हैं।

आप इस जीवन में उन्हें खत्म करने का काम शुरू कर सकते हैं, लेकिन आप इस जीवन में उन्हें खत्म नहीं कर पाएंगे। इसलिए आप पापमोचन में जाएँगे। तो, पहेली का दूसरा टुकड़ा पापमोचन है।

तो, कौन पाप और या शुद्धिकरण के बारे में बात करना चाहता है? क्या हम यहाँ स्पष्ट रूप से जानते हैं कि क्या हो रहा है? क्या हम इस कैथोलिक मध्ययुगीन चर्च में क्या हो रहा है, इसकी तस्वीर समझ पा रहे हैं? यह आपकी दुनिया का हिस्सा नहीं हो सकता है, लेकिन यह मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च की दुनिया थी। यहाँ कुछ है? क्या आप ठीक हैं? ठीक है, ठीक है, चलो प्रायश्चित पर चलते हैं। चलो प्रायश्चित पर चलते हैं, और फिर हम भोगों पर चलते हैं।

ठीक है, तो तस्वीर का तीसरा नंबर है प्रायश्चित। अब, मैं प्रायश्चित का वर्णन दो तरीकों से करूँगा। सबसे पहले, मैं इसे एक संस्कार के रूप में वर्णित करूँगा क्योंकि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च में, प्रायश्चित एक संस्कार था।

यह भगवान की अदृश्य कृपा का एक दृश्य संकेत था। तो, दूसरा तरीका सामान्य तरीका है, हालाँकि सड़क पर चलने वाला आदमी प्रायश्चित के बारे में बात करता है। यह कैसे होता है? तो, ठीक है, सबसे पहले, एक संस्कार के रूप में।

ठीक है, एक संस्कार के रूप में, प्रायश्चित के चार प्रकार के चरण होते हैं, मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं। तो, यहाँ चार चरण हैं। पहला चरण है आपका पाप करना।

खैर, हर कोई पाप करता है, इसलिए हम सभी उस पहले चरण में हैं। ठीक है, ठीक है, यह पहला बड़ा कदम है, आप पाप करते हैं। ठीक है, अब दूसरा चरण है कि आप स्वीकार करते हैं।

भगवान आपको आशीर्वाद दें; आप अपने पापों को स्वीकार करें। दूसरा चरण है कि आप पुजारी के पास जाएँ और अपने पापों को स्वीकार करें। न केवल अपने प्राणघातक पाप, अपने मामूली पाप, बस अपने पापों को स्वीकार करें, अपने सभी पापों को।

मेरा मतलब है, यह आपको कवर करने वाला है, इसलिए यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। ठीक है, प्रायश्चित की पूरी प्रणाली में तीसरा चरण यह है कि अब आप पुजारी से क्षमा प्राप्त करते हैं। पुजारी आपको आपके पापों से मुक्त करता है।

आपको वह क्षमा मिलती है। वह आपको वह क्षमा प्रदान करता है, और यह अच्छी बात है। मेरा मतलब है, यह एक अद्भुत बात है।

चौथा चरण तब होता है जब पुजारी आपको इस जीवन में कुछ निश्चित कार्य करने के लिए कहता है ताकि आप अपने पापों से जुड़ी सज़ा का भुगतान कर सकें। इसलिए, पुजारी आपको कार्य सौंपने जा रहा है, और ये प्रायश्चित के कार्य हैं जो आप करने जा रहे हैं। अब, हम बाद में बात करेंगे कि वे कार्य क्या हैं, लेकिन पुजारी आपको प्रायश्चित के वे कार्य सौंपने जा रहा है।

ठीक है, तो चार चरण हैं: पाप, स्वीकारोक्ति, पुजारी द्वारा क्षमादान, और फिर वह आपको प्रायश्चित के कार्य सौंपेगा जो आपको उस दंड से मुक्ति पाने के लिए करने होंगे जो आपको करना है। अब, इस प्रणाली के तहत एक संस्कार के रूप में, आप जानते हैं, तेजी से और ढीले खेलें। मान लीजिए कि आप पुजारी को छोड़ देते हैं, तो उसने आपको अपने पापों से मुक्त कर दिया है, और उसने आपको करने के लिए प्रायश्चित के कुछ कार्य सौंपे हैं।

मान लीजिए कि आप चले जाते हैं और आप तय करते हैं कि मैं प्रायश्चित के वे काम नहीं करने जा रहा हूँ। आप मज़ाक कर रहे हैं। मैं ऐसा बिल्कुल नहीं करने जा रहा हूँ।

यह एक नश्वर पाप है। आपकी आत्मा अब नरक में जाएगी जब तक आप उस चर्च में वापस नहीं जाते, उस पादरी के सामने यह स्वीकार नहीं करते कि आपने प्रायश्चित के वे कार्य नहीं किए जो उसने आपको सौंपे थे, और इसलिए अब आपको उस पाप के साथ-साथ दूसरों के पापों को भी स्वीकार करना होगा, और इसलिए आप फिर से उसी स्थिति में आ जाएँगे। आप उस चक्र से बच नहीं सकते जो प्रायश्चित के पूरे संस्कार में बना हुआ है।

आप ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि अगर आप बाहर जाते समय ऐसा करने की कोशिश करते हैं और प्रायश्चित के वे काम नहीं करते, तो आप नश्वर पाप कर रहे हैं। आप यहाँ फिर से शुरूआती स्थिति में पहुँच गए हैं। इसलिए, अगर आप एक सच्चे आस्तिक हैं, और अगर आप एक सच्चे ईसाई हैं, और आप खुद को और भगवान को खुश करना चाहते हैं, तो आपको प्रायश्चित के वे काम करने ही होंगे।

आपके पास कोई और विकल्प नहीं है। तो, यह एक चक्र है। यह एक महत्वपूर्ण चक्र है।

चार कदम। आप जानते हैं कि आप इससे दूर नहीं जा सकते। ठीक है, यह एक संस्कार के रूप में प्रायश्चित है।

यह तपस्या की धार्मिक समझ है। यह तपस्या की धार्मिक तस्वीर है। दूसरा तरीका, आइए तपस्या को परिभाषित करें और देखें कि सड़क पर लोग तपस्या के बारे में कैसे बात करते हैं।

सड़क पर चलने वाले लोग प्रायश्चित के बारे में इस तरह के धार्मिक ढाँचे में बात नहीं करते थे। सड़क पर चलने वाले लोग प्रायश्चित को सिर्फ पुजारी द्वारा सौंपे गए कामों के रूप में संदर्भित करते थे। वे कहते थे, हम प्रायश्चित कर रहे हैं।

तो, उनके लिए प्रायश्चित बस एक ऐसी चीज़ थी जो आप करते हैं। यह कुछ ऐसा है जिसे आपको इस सज़ा से बचने के लिए काम करना पड़ता है। तो, यह सज़ा से बचने के लिए काम करने, प्रायश्चित करने की एक बहुत ही सरल समझ थी।

ठीक है, अब प्रायश्चित के बारे में सवाल यह है कि चर्च द्वारा प्रायश्चित की इस पूरी प्रणाली का उद्घाटन क्यों किया गया? चर्च ने ऐसा क्यों किया? चर्च ने ऐसा क्यों किया? खैर, वास्तव में चर्च द्वारा प्रायश्चित की शुरुआत करने और चर्च के जीवन में प्रायश्चित को एक संस्कार के रूप में लाने के लिए एक बहुत ही सकारात्मक कारण था। सकारात्मक कारण, मुझे लगता है कि यह हमें थोड़ा नकारात्मक लगता है क्योंकि आप स्वीकार करते हैं, मेरा मतलब है कि आप पाप करते हैं, आप स्वीकार करते हैं, आपको क्षमा मिलती है, फिर आपको ये काम करने होते हैं। यह हमें थोड़ा नकारात्मक लगता है।

लेकिन चर्च के पास ऐसा करने के पीछे वास्तव में एक सकारात्मक कारण था। चर्च के ऐसा करने का कारण सच्चे विश्वासियों को चर्च के हृदय में बनाए रखना था। हम इन सच्चे विश्वासियों को चर्च के जीवन और समुदाय के जीवन में बनाए रखना चाहते हैं।

हम उन्हें अनुग्रह की स्थिति में रखना चाहते हैं। उन्हें अनुग्रह की स्थिति में रखने और उन्हें ईश्वर के साथ रखने का एकमात्र तरीका इस तरह की तपस्या प्रणाली है क्योंकि वे हमेशा चर्च से जुड़े रहेंगे।

वे हमेशा वही करेंगे जो चर्च की अपेक्षा है। वे हमेशा चर्च के समुदाय का हिस्सा रहेंगे। इसलिए जबकि यह एक तरह से नकारात्मक प्रतीत होता है, इसके पीछे एक तरह से सकारात्मक कारण था।

एक अच्छा पुजारी वास्तव में स्थानीय गांव में भगवान की सेवा करने की कोशिश कर रहा है; एक अच्छा पुजारी वास्तव में उन सभी विश्वासियों को चर्च में रखने की इच्छा रखता है और उन्हें झुंड छोड़ने नहीं देता, उन्हें खोई हुई भेड़ नहीं बनने देता, इत्यादि। तो, इसके पीछे एक सकारात्मक कारण था, मुझे नहीं पता, इसका कोई कारण था। हमें यह उल्लेख करने की आवश्यकता है ताकि हम, आप जानते हैं, बच्चे को स्नान के पानी के साथ बाहर न फेंकें, जैसा कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक चर्च ने इसके बारे में सोचा था।

ठीक है, अब सवाल यह है कि मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक दुनिया में आपको किस तरह का प्रायश्चित सौंपा गया होगा? मैं बस कुछ का उल्लेख करूँगा। तो आप जाते हैं, अपने पापों को स्वीकार करते हैं, और पुजारी द्वारा किस तरह का प्रायश्चित स्थापित किया जाता है। मैं कुछ सामान्य बातें बताने जा रहा हूँ।

मेरा मतलब है कि आप अपने प्रायश्चित के लिए कई तरीके अपना सकते हैं, लेकिन यहाँ कुछ सामान्य तरीके दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, उपवास। एक पुजारी आपसे एक निश्चित समय के लिए उपवास करने के लिए कह सकता है।

आपके जाने के बाद, आप अपने पापों को स्वीकार करते हैं, वह आपको आपके पापों से मुक्त कर देता है। एक पादरी आपसे उपवास रखने के लिए कह सकता है। और उस उपवास में, यह एक अनुस्मारक है कि आपने पाप किया था, लेकिन अब आप पाप से मुक्त हो गए हैं और इसी तरह।

दूसरा यह है कि कोई पादरी आपसे मसीह के नाम पर दान देने के लिए कह सकता है। इसलिए, चर्च से बाहर निकलें और गरीबों को दान दें। मसीह के नाम पर अपना माल गरीबों के साथ बाँटें।

यह प्रायश्चित का कार्य हो सकता है जिसे करने के लिए आपसे कहा जा सकता है। तो, यह दूसरा उदाहरण है। तीसरा उदाहरण दया का कार्य हो सकता है।

उदाहरण के लिए, बीमारों के बीच दया के काम, गरीबों के बीच दया के काम, गरीबों को खाना खिलाने में मदद करना, ऐसा ही कुछ। लेकिन दया के काम, पुजारी आपको अपने प्रायश्चित के संकेत के रूप में करने के लिए कह सकते हैं। कुछ और जो, फिर से, मैं यहाँ सिर्फ कुछ हद तक उल्लेख कर रहा हूँ, लेकिन प्रायश्चित का एक और काम प्रार्थना था।

संख्या में बार प्रभु की प्रार्थना कहने के लिए नियुक्त कर सकता है, और इसी तरह, प्रार्थना। पश्चात्ताप का पाँचवाँ कार्य, आप जानते हैं, हर बार जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो क्या आप खुश हैं? मैं बस इतना पूछना चाहता हूँ, क्या आप खुश हैं कि आप 21वीं सदी में रहते हैं? क्या आप खुश हैं कि आप 21वीं सदी में रहते हैं? बस सोचिए कि मध्ययुगीन दुनिया में रहना कैसा होगा। और सोचिए कि अगर आपको माइग्रेन है, उदाहरण के लिए, अगर आपको माइग्रेन होता है या अगर आपको बहुत बुरा दांत दर्द या बुरा गठिया या ऐसा कुछ होता है।

आप जानते हैं, हम आधुनिक दुनिया में इस चीज़ का ख्याल रख सकते हैं। क्या यह अच्छी बात नहीं है? मेरा मतलब है, क्या यह अच्छी बात नहीं है कि हम इसका ख्याल रख सकते हैं? मध्ययुगीन दुनिया में, आप बस अपने पूरे जीवन में इससे पीड़ित रहे। आप अपने माइग्रेन से पीड़ित थे या आप अपने गठिया से पीड़ित थे या आप सभी प्रकार की बीमारियों से पीड़ित थे।

कल्पना कीजिए, आप सभी को दांत में दर्द हुआ होगा, है न? कल्पना कीजिए कि अगर आपके सभी दांत हर समय दर्द करते रहें, तो आप जानते ही होंगे। आप बस इसी दर्द से पीड़ित हैं, आप जानते ही होंगे। यह एक कठिन दुनिया थी।

कल्पना कीजिए कि अगर आपको किसी कारण से अपना हाथ काटना पड़े, कोई बीमारी आपके हाथ में आ जाए। आप जानते हैं, आज की दुनिया में, यह कठिन है, लेकिन एनेस्थीसिया जैसी चीज़ें भी हैं। उस दुनिया में, आप जानते हैं, आप अपना हाथ बाहर निकालते हैं, और वे इसे काट देते हैं, और ऐसा ही होता है और, आप जानते हैं, बस मुस्कराइए और इसे सहन कीजिए, आप जानते हैं।

तो, अगर आपका कोई अंग कट गया हो, तो हाय। तो, मुझे खुशी है कि मैं आधुनिक दुनिया में रहता हूँ। मेरा मतलब है, मैं आधुनिक दुनिया में रहने के लिए खुश हूँ, खासकर जब बात दवा और बीमारियों और इलाज वगैरह की हो। मैं खुश हूँ।

लेकिन पुजारी आपको जो तपस्या करने के लिए कहेंगे, उनमें से एक है धैर्यपूर्वक कष्ट सहना, धैर्यपूर्वक कष्ट सहना। इसलिए यदि आप बहुत सी बीमारियों, दर्द, पीड़ा, बीमारियों आदि से पीड़ित हैं, तो धैर्यपूर्वक कष्ट सहना ही आपकी तपस्या का संकेत है। और अपने सभी कष्टों के

लिए ईश्वर के खिलाफ़ शिकायत न करें, बल्कि धैर्यपूर्वक कष्ट सहें, क्योंकि यह आपको इस जीवन में तपस्या के रूप में दिया गया है, और आपको इसमें आनंद लेना चाहिए, आप जानते हैं।

तो यह थोड़ा मुश्किल था। तो अब मैं आखिरी तरीका बताता हूँ। मैंने आखिरी तरीका सबसे महत्वपूर्ण के रूप में बचा कर रखा है, इसलिए मैं इसका उल्लेख यहाँ कर रहा हूँ, और फिर हम अगले बुधवार या उसके आसपास वापस आने पर इस पर चर्चा करेंगे।

तो प्रायश्चित्त का आखिरी तरीका, मेरा मतलब है, हम बहुत सारे तरीके बता सकते हैं। मैंने जो तरीके बताए हैं, वे सिर्फ़ उदाहरण हैं। लेकिन मैंने जो आखिरी तरीका बताया है, वह सबसे महत्वपूर्ण है।

और आखिरी तरीका एक ऐसी प्रणाली है जिसे चर्च ने शुरू किया था जिसे भोगों की प्रणाली कहा जाता है। चर्च ने लोगों के लिए प्रायश्चित्त के साधन के रूप में भोगों की एक प्रणाली स्थापित की। अब हमारे पास भोगों पर एक पूरा व्याख्यान है।

मैं यहाँ सिर्फ़ भोग का जिक्र करना चाहता हूँ। भोग से हमारा क्या मतलब है? भोग का मतलब है, यातना के दौरान कुछ समय की छूट। तो भोग का मतलब है यातना के दौरान कुछ समय की छूट।

यह पापमोचन में बिताए गए समय को कम करना है। और जब हम मध्ययुगीन दुनिया में पहुँचे और जब हम लूथर की दुनिया और बाकी सब में पहुँचे, तो भोगों की पूरी प्रणाली प्रायश्चित्त का प्राथमिक तरीका बन गई। हम यहाँ इसके बारे में चिंता नहीं करने जा रहे हैं क्योंकि हम इसे पहली के आखिरी टुकड़े के रूप में देखेंगे, नंबर डी, भोगों की पूरी प्रणाली।

लेकिन यहाँ, सिर्फ़ तपस्या के साथ इसका उल्लेख करने के लिए, यह तपस्या की प्रणाली का हिस्सा है और इसी तरह की अन्य बातें। अब, मैं सिर्फ़ कुछ बातें बताना चाहता हूँ। मेरे पास यहाँ एक बात है; मैं बस शुरू कर पाऊँगा, लेकिन तपस्या कर्मों की एक प्रणाली है। यहाँ तपस्या और कर्मों के साथ क्या हो रहा है? खैर, एक अर्थ में, भगवान ने जो किया है वह यह है कि उन्होंने पृथ्वी पर एक न्यायाधिकरण की स्थापना की है।

पुजारी न्यायाधिकरण का हिस्सा हैं, भगवान के न्यायाधिकरण का। और भगवान के न्यायाधिकरण के हिस्से के रूप में पुजारी इस पूरे कार्य प्रणाली को स्थापित करने जा रहे हैं, जिसका उल्लेख हमने किया है, पाप, स्वीकारोक्ति, क्षमा और प्रायश्चित्त। इसलिए, पुजारी इसके प्रभारी होने जा रहे हैं।

अब, पुजारियों को यहाँ मदद मिलती है। और मैं यहाँ सिर्फ़ मुख्य बात बताना चाहता हूँ। नहीं, माफ़ करें।

नीचे, नहीं, क्षमा करें। नीचे, यह यहाँ है। मैं बस कुछ मदद का उल्लेख करना चाहता हूँ जो पुजारी आपको तपस्या सौंपते समय देते हैं।

और यह, मुझे लगता है कि इसे समझना मेरे लिए कठिन है। लेकिन फिर भी, अगर हम खुद को मध्ययुगीन दुनिया में वापस रखते हैं, तो मुझे लगता है कि हम इसे समझ लेंगे। इसे अतिरेक का कार्य कहा जाता है।

ठीक है। अब, अतिरेक के कार्यों को समझाने के लिए, हमें याद रखना होगा, हमें खुद को आधुनिक दुनिया, उत्तर आधुनिक दुनिया, जिस भी दुनिया में हम रह रहे हैं, उससे बाहर निकालना होगा। हमें खुद को इस दुनिया से बाहर निकालना होगा।

हमें अपने दिमाग को मध्ययुगीन दुनिया में वापस लाना होगा। ठीक है। यदि आप मध्ययुगीन दुनिया में रह रहे हैं, तो आप जीवन की कल्पना कर रहे हैं, आप मध्ययुगीन दुनिया में जीवन की यथार्थवादी कल्पना कर रहे हैं।

आप स्वर्ग की कल्पना कर रहे हैं, आप जानते हैं, सोने की सड़कों के साथ। आप यातना स्थल की कल्पना कर रहे हैं जैसे हमने यातना स्थल की तस्वीर दिखाई थी। आप यातना स्थल की कल्पना इसी तरह कर रहे हैं।

या फिर आप नरक की कल्पना ऐसे कर रहे हैं जैसे लोग हमेशा के लिए कष्ट सह रहे हों, इत्यादि। लेकिन दुनिया को देखने का आपका तरीका शाब्दिक था। ठीक है।

अब, इसका एक हिस्सा अतिरेक का कार्य है। तो, मैं अतिरेक के कार्यों को परिभाषित करता हूँ। अतिरेक के कार्य वे अतिरिक्त पुण्य हैं जो संत करते हैं, और ये अतिरिक्त पुण्य संतों और शहीदों द्वारा किए जाते हैं और स्वर्ग में एक खजाने में जमा किए जाते हैं।

उदाहरण के लिए, मरियम सीधे स्वर्ग चली गईं। यरूशलेम में एक चर्च है जो उस जगह पर बना है। इसलिए मरियम सीधे स्वर्ग चली गईं।

ठीक है। जब मैरी स्वर्ग गईं, तो उसने अपने जीवनकाल में बहुत सारे पुण्य कार्य किए। लेकिन उसे अपने उद्धार के लिए उनकी ज़रूरत नहीं थी, देखिए, क्योंकि उसे पापमोचन में जाने की ज़रूरत नहीं थी।

उसे किसी भी पाप का प्रायश्चित्त करने की आवश्यकता नहीं थी। वह पाप रहित थी, ऐसा चर्च ने सिखाया। इसलिए उसे अपने द्वारा किए गए किसी भी पाप का प्रायश्चित्त करने की आवश्यकता नहीं थी।

और वह एक ऐसी महिला है जिसने अपने पाप रहित जीवन में बहुत सारे अच्छे काम किए, बहुत सारे पुण्य कर्म किए। उसके द्वारा किए गए उन सभी पुण्य कर्मों का क्या हो रहा है? वे स्वर्ग में एक भण्डार में संग्रहित हैं। अब, यदि आप मध्ययुगीन दुनिया में रहते हैं, तो आप सचमुच कल्पना करेंगे कि मैरी के पुण्यों का खजाना उस खजाने में संग्रहीत है।

और संत और शहीद और पोप और बाकी सब, वहाँ बहुत सारी योग्यता है। ठीक है। उन्हें अतिरेक के कार्य कहा जाता है।

ठीक है। तो, इसलिए, जब आप अपने पापों को स्वीकार करते हैं, और आपको क्षमा मिल जाती है, और आपको प्रायश्चित के कार्य दिए जाते हैं, तो पुजारी आपके लिए क्या कर सकता है? पुजारी उन अतिरेक के कार्यों से भी लाभ उठा सकता है और उन गुणों को आपके जीवन में लागू कर सकता है। तो यहाँ थोड़ा सा हिसाब-किताब चल रहा है।

वह उस खजाने से पैसे निकाल रहा है। वह उन कामों में से कुछ को आप पर लागू कर रहा है जैसे कि वे आपके काम हों। वे आपके काम नहीं हैं, लेकिन वे आपके प्रायश्चित के समय में आपकी मदद करने जा रहे हैं, और वे आपको पापमोचन में कम समय बिताने में मदद करने जा रहे हैं।

अब, लेखांकन के संदर्भ में यह सब कैसे हुआ? मुझे कोई जानकारी नहीं है क्योंकि यह एक बहुत बड़ी लेखांकन समस्या रही होगी। मुझे भोगों के बारे में थोड़ा बहुत पता है, जिसके बारे में हम बात करते समय बात करेंगे। लेकिन यह सब वास्तविक से ज़्यादा काल्पनिक है।

लेकिन अगर पुजारी ने कहा, मैं मैरी से कुछ गुण ले रहा हूँ, और मैं उन्हें आपके जीवन में लागू कर रहा हूँ, तो आपने उस पर विश्वास किया; यह आपके लिए एक शाब्दिक सत्य था। उसे आपको यह साबित करने की ज़रूरत नहीं थी। आपने उस पर विश्वास किया।

यह आपके लिए सचमुच सच है। तो फिर वह क्या कर रहा है? वह आपकी तपस्या में आपकी मदद कर रहा है। वह आपको कुछ अतिरिक्त पुण्य दे रहा है जो आपके जीवन में आपकी मदद करने वाले हैं, और यह एक अच्छी बात है।

तो, इस पूरे मामले में, मुझे कहीं न कहीं अतिरेक के कामों का ज़िक्र करना ही होगा, और यह उनका ज़िक्र करने के लिए स्वाभाविक जगह लगती है क्योंकि अतिरेक के काम पूरी तरह से प्रायश्चित की व्यवस्था से जुड़े हुए हैं। तो, क्या यह समझ में आता है? क्या अब तक हम ठीक हैं? हम समझते हैं कि हम आधुनिक रोमन कैथोलिक दुनिया के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम मध्ययुगीन दुनिया के बारे में बात कर रहे हैं, और हम बस इसकी एक तस्वीर पाने की कोशिश कर रहे हैं।

अब हमने कड़ी मेहनत की है। इसलिए, वे आपको एक दिन की छुट्टी देते हैं क्योंकि आपने बहुत मेहनत की है। वे आपको सोमवार की छुट्टी देते हैं।

इसलिए, वे नहीं चाहते कि आप बहुत ज़्यादा मेहनत करें। इसलिए, वे आपको सोमवार की छुट्टी देते हैं। तो, हम आपसे अगले बुधवार को मिलेंगे।

समय तेजी से बीत जाएगा। मजदूर दिवस सप्ताहांत की शुभकामनाएं। बुधवार को मिलते हैं।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह सत्र 2, मध्यकालीन कैथोलिक धर्म है।